Volume : 1 | Issue : 5 | Nov 2012 • ISSN No 2277 - 8160

Research Paper | Literature

षोध निबंध
स्वातांयोत्तर हिंदी नाटकों में दलित विमर्ष
(‘वतनवालों ! दास्तॉं तुम्हारी है।’ के परिप्रेक्ष्य में)

डॉ. षषिकांत सोनवणे
"सावन"

सहायक प्राध्यापक, स्नातकोत्तर हिंदी षोध विभाग,एप्रताप महाविद्यालय, अमलनेर - ४२५४०१ (महाराश्ट्र)

ABSTRACT

स्वातायोत्तर हिंदी नाटकों में पौराणिक तथा ऐतिहासिक कथ्यों के अलावा कुछ सामाजिक समस्याओं को भी प्रस्तुत किया गया है। इन्होने भले ही दर्षकों को मंत्रामुग्ध न किया हो पर समकालिन अव्यवस्था की ओर अवष्य उन्मुख किया है। फलत: दलित एवं दलितेतर हिंदी साहित्यकारों ने अपनी नाट्य कृतियों के माध्यम से दलित विमर्ष को स्वरांकित किया है। इन नाट्य कृतियों की संख्या अल्प होने के उपरान्त भी कथ्य और षिल्प के आधारपर ये विवेकषिल पाठकों को झकझोर देती है। वेदना और विद्रोह की बुनियाद पर खडी ये सत्यप्वेशि रचनाऍं हिंदी साहित्य की नई पहचान कराती है। स्वातांयोत्तर हिंदी नाट्य जगत में प्रो. डॉ. वासुदेव सोनवणे द्वारा निर्मित वास्तव केंद्री नाट्य कृति "वतनवालों ! दास्तॉं तुम्हारी है "अपना प्रथक स्थान रखती है। दलित विमर्ष को केंद्र में रखनेवाली यह नाट्य रचना राश्ट्रीय, सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनितिक तथा मानसिक उत्पीडन की हुबहु तसवीर है। स्वतांयता के बाद साठ-पेसश्ठ वर्शो उपरान्त की देष के उपेक्षित दीनदलितों की दैन्यावस्था की कारूणिक झाकियॉं यह कृति प्रस्तुत करती है। साथ ही राश्ट्रीय एवं सामाजिक मूल्यों तथा आदर्षों के खोखलेपण का भंडाफोडकर, दलित समुदाय को उन्नति हेतु संघर्शरत रहने का आवाहन करती है।

KEYWORDS :

१) स्वातांयोत्तर हिंदी दलित नाटक :

स्वातांयोत्तर हिंदी नाटकों में दलित विमर्ष का चित्रण मिलता है। ऐसे नाटक मूलत: उपेक्षित समुदायों के साहित्यकारों द्वारा लिखे गये है, जो उनकी स्वानुभूति है। दलित विमर्ष का चित्रण गैर दलित नाटककारों द्वारा भी हुआ है जो सहानुभूतिपूरक है। दलित नाटकाकारों द्वारा निर्मित हिंदी नाट्यरचनाऍं दलित जीवन के वास्तववादि दस्तावेज बने हुए हैं। इन में उल्लेखनिय हैं - षंभुक मूनि (स्वामी अछूतानंद ‘हरिहर‘), कठौति में गंगा (डॉ. एन. सिंह) क्रांतिबा फूले (रतनलाल सोनाग्रा), अंतिम अवरोध (डॉ. एन. आर. सागर), मरजीवा (मुद्रा राक्षस), कोर्ट मार्षल (स्वदेषी दीपक), अंतिम अवरोध (डॉ. एन. आर. सागर), वीरांगना झलकारी (डॉ. माताप्रसाद), मुक्ति की तडफ (डॉ. माता प्रसाद), समाज की नाक (रतनकुमार सांभारिया), संवाद के पीछे (मनोजकुमार केन), तथा वतनवालो ! दास्तॉं तुम्हारी है (डॉ. वासुदेव सोनवणे), अदलित रचनाकारों द्वारा लिखे दलित विमर्ष के नाटकों में उल्लेखनिय है - एक सत्य हरिष्चंद्र (डॉ. लक्ष्मी नारायणलाल), रोटी और बेटी (रमेष मेहता), बाढ का पानी (डॉ. षंकर षेश), महाभोज (मन्नु भंडारी), काला मूँह (गोविंद चातक), गंगा माटी (डॉ. लक्ष्मी नारायणलाल), माटी जागी रे (ज्ञानदेव अग्निहोत्री), सारथीपूत्र (राजेंद्रमोहन भटनागर), काषी का जुलाहा (गोविंद वल्लभपंत), यमगाथा (दुधनाथ सिंह), भस्मासुर अभी जिंदा है (डॉ. सुरेषचंद्र षुक्ल), इतिहासचक्र (दयाप्रकाष सिन्हा), तमाषा (राजकुमार ‘भ्रमर‘), चेहरे (डॉ. षंकर षेश), बहिश्कार (विष्वेष्वर), गारे की दीवार (नरेंद्र कोहली), जादू का कालिन (मृदुला गर्ग), पहला राजा (जगदीषचंद्र माथुर), किसान (षिल), गूँगा इतिहास (अभिमन्यु अनंत), हरबार (हमीदूल्ला), अंतत: (विवेकानंद), सुनो षेफाली (कुसुमकुमार), काला राजा (ललित थपल्याल), निरंतर (वृंदावनलाल वर्मा), मंदीर की चार पाई (कीरणचंद्र षर्मा), समर्पण (जगन्नाथ प्रसाद ‘मिलिंद‘), तथा प्रकाष स्तंभ (हरिकृश्ण प्रेमी)

२) स्वातांयोत्तर दलित दस्तावेज :

वतनवालो ! दास्तॉं तुम्हारी है : प्रो. डॉ. वासुदेव सोनवणे जी द्वारा लिखित नाट्यकृति ‘वतनवालो! दास्तॉं तुम्हारी है‘। भारतीय दलित जीवन का यथार्थ दस्तावेज है। उस में दलितों के दुख दर्दो को केंद्र में रखकर इनके प्रति भारतीय समाज की संकीर्णता एवं मनोरूग्णता का उद्घाटन किया है। नाटककार ने मूलत: सूत्रधार के माध्यम से ऐसे सामाजिक विकृति का बारबार पर्दाफाष किया है। दलितों ने जो भोगा है या जो आज भी भोग रहे है उसी उत्पीडन एवं षोशण की यह दास्तॉं है। नाट्यकृति के आरंभ में सूत्रधार इन बातों की ओर हमारा ध्यान आत्कृश्ठ कर कहता है ‘‘वतनवालों ! जरा ऑंखें खोलकर देखो और कान खोलकर सुनो। ये कहानी उस देष की है, जो तुम्हारा अपना देष है। इस देष में संविधान और जनतंत्र केवल नाम को है। वास्तव में तानाषाही है। सत्ता के लिए अनूचित मार्ग अपना कर यहॉं क्या नही होता? मेहरबान, कद्रदान आप को ज्ञात है बुद्ध और सम्राट अषोक का काल यदि छोड दिया तो इस देष का इतिहास सिर्फ गुलामी का इतिहास है। यहॉं हूण, तुर्क और मोगल विजेता क्यों बने? अंग्रेजों ने डेढ सौ साल राज क्यो किया ? इस का कारण है

हमारी फूटनीति विशमता, जातिवाद, वर्ण वर्ग व्यवस्था । आज भी हमे गुलाम करनें के लिए ये गंदे रस्म रिवाज कार्यरत है''। - [१]

नाटककार ने समकालिन स्थिति का भंडा फोड करने के लिए विविध क्षेत्रों के प्रतिनिधि चरित्रों का चयन किया है। इस नाटक में नायक नायिका तथा प्रधान चरियों के रूप में अमर, भारतीदेवी, क्रांति, अब्दूल एवं महाकवी विषाल उभरकर आये हैं। राजनेताओं के रूप में प्रेसिडेंट मफतलाल, चरणदास, रामलाल, बिहारी, नवरंगी, रणछोडदास, मोचीराम, धार्मिक पाखंडी के रूप में स्वामी सत्यानंद, संन्यासी, पूजा, सरिता, अर्चना, रूप यौवना वसुंधरा छलकपट के लिए सुंदरी, तथा दलित सवर्ण संघर्श हेतु मुखिया ठाकुर, दलित युवक, दलित युवती दलित बुढा एवं ठाकुर के गुंडे जैसे चरित्रों की निर्मिती की है।

एक गॉव में हुई दलित आगजनी एक सामुहिक बलात्कार की घटना को केंद्र रखकर अपराधियों की विकृत मानसिकता, उनकी राजनीतिक पहूँच, उनके हथकंडे, अपराधियों को सजा दिलाने के लिए नायक नायिका द्वारा होनेवाला संघर्श, सरकार एवं मतलबी राजनेताओं की दोगनी राजनिति एवं सत्य की जीत जैसी षृंखलाबद्ध घटनाएँ दलित जीवन की मर्मांतक पीडा प्रदर्षित कराती है। साथ ही राश्ट्रीय एवं सांस्कृतिक जीवन की पतनषिल झांकियॉ भी प्रस्तुत करती है।

३) वतनवालों ! दास्तॉ तुम्हारी है में दलित विमर्ष :
महाराश्ट्र के प्रसिध्द दलित चिंतक एवं मराठी हिंदी के साहित्यकार प्रो. डॉ. वासुदेव सोनवणे द्वारा निर्मित 'वतनवालों ! दास्तॉ तुम्हारी है' नाट्यकृति मूलत: स्वातंायोत्तर दलित जीवन की दर्दभरी दास्तान है। भारतीय निम्नवर्गों के प्रति आज भी बनी हुई परम्परागत विकृत मानसिकता एवं इसके कारण होनेवाले अन्याय अत्याचारों के वास्तविकता दृष्य खीचे गए हैं।

अ) दलित विमर्ष के सामाजिक संदर्भ :
सामाजिक विशमता के ढाचे पर खडे परम्परागत हिंदु समाज के असमान दृश्टिकोन को प्रस्तुत करते हुए नाटककार ने असामाजिकता के मार्मिक प्रसंग साकार किए है। इसमें दलितों के उपेक्षित, घृणामयी तथा संघर्शषिल जीवन के दर्षन होते हैं। नाट्यारंभ में गाली गलौच से ही असामजिकता से हमारा परिचय होतो है।

''मुखियॉ ठाकुर - ''क्यों बे सालो। कुत्तों की औलाद, तुमने हमारे कुए पर चढने की हिम्मत कैसे की?''

दलित बुढा - (गिडगिडाते हुए) ''मुखियाजी, गुस्ताखी माफ करो। मायबाप, बस्ती का कुआ सूखने से हमे पानी नही मिलता। हम सबेरे से प्यासे थे।''

मुखिया ठाकुर - ''बेषर्म कही के, सबेरे से प्यासे है तो हमारा मुत पिओ, लेकिन हमारे कुओं को मत छुओ।

दलित युवक - अरे वो, हरामी ठाकुर! जरा जबान को लगाम दो। अब तेरी तानाषाही नही चलेगी। फुले-अम्बेडकरजी ने हमे इन्सान बनाया है। लडना सिखाया है।

मुखिया ठाकुर - ''जा बे हरामखोर। सुव्वर के बच्चे, भाडे में जाने दे तेरे फुले - अम्बेंडकर को।'' - [२]

नाटककार ने 'महाकवि के चरित्र द्वारा देष के दीनदलितोंकी पीडा मुखरित कर, दलितों में स्वाभिमान की मषाल अत्यधिक प्रज्वलित करने का कार्य किया है। एक प्रसंग में नायक अमर महाकवि के विचार एवं कार्य प्रेरित होकर कहता है,

''महाकवि ! हमे विष्वास है, आपके मार्गदर्षन से हम जल्द ही यह तख्ता बदल देंगे। आप के विचार मूर्दे में भी प्राण डाल देते हैं। कितने अच्छे विचार है आपके ...

यह भूखे नंगे लोग, यहॉ इन्साफ मांगते हैं
रोटी के लिए करोडो हाथ काम मांगते हैं
रस्म रिवाज बदलने है, भाई ! चलो संग संग
जुग जुग जिये, जुग जुग जिये, इन्कलाबी जंग''-[३]

ब) दलित विमर्ष के राजनीतिक संदर्भ :
गृहमंत्री चरणदास तथा प्रेसिडेंट जैसे मतलबी एवं पाखंडी राजनेताओं का पर्दाफाष करते हुए उनका दलित विरोधी रूप नाटककार ने दर्षकों सन्मुख रखा है। देष की सामान्य जनता की भावनाओं से खिलवाड करने वाले राजनेता खुंख्वार क्रुरकर्मी बने हैं। निम्न संवादों से इस के प्रमाण मिलते हैं ....

''प्रेसिडेंट : मेरे प्यारे भाईयो और बहनो । मैं और मेरा दल आपके आभारी है। इस इलेक्षन में आपने पुरे देष की सत्ता तथा संपुर्ण बागडोर मेरे हाथों में सौप कर, इतिहास को नया मोड दिया है। आपको मैं आष्वासन

देता हुँ, कि इस मुल्क में दलितों पर कभी अत्याचार नही होने दुँगा। आनेवाले दस सालों में देष की बेकारी तथा अन्य समस्याओं को दूर करके स्थिर प्रषासन दूंगा। इस देष को सारे जहाँ में महान बनाऊँगा। स्मगलर तथा कालाबाजार करनेवालों का निमूर्लन करुँगा।

चरणदास : बस करो प्रेसिडेंट, आप सिर्फ पाँच साल को लिए प्रेसिडेंट बने हो। दस साल की बात मत करो।

प्रेसिडेंट : क्या बकते हो ? हम अगले पंच वार्शिक को भी चुनकर आयेंगे।

चरणदास : ये अब सपने में भी नही हो सकता।

प्रेसिडेंट : मुझे पुरा विष्वास है। जनता फिर से प्रेसिडेंट करेगी। तुम बकवास बंद करो।'' - ४

मुखियाँ और ठाकुर और उसके गुंडों द्वारा दलित युवती पर हुए बलात्कार की घटना को राजनीति के प्रभाव से नयी मोड देने का, उसे दबाकर रखने का तथा दलित नेता को गुनाहगार ठहराने का शडयंत्र खेला जाता है। दलित नायक अमर एवं सवर्ण राजनेताओं के संवाद इसकी साक्ष्य है।

''अमर : मुझे मेरे सवालों के जवाब चाहिए। मैं चरणदास जी से भी प्रष्न करता हुँ।

चरणदास : क्या प्रष्न है?

अमर : आपके रिष्तेदार मुखिया ठाकुर और उस के गुंडो ने दलितों के साथ क्रुरता से व्यवहार कर के दलित युवती पर बलात्कार किया है।

चरणदास : अरे भाई ! वे मेरे रिष्तेदार नही है। हम लोग मिनिस्टर होने के कारण कोई भी हमारा रिष्तेदार बन जाता है। मैने उस दलित अत्याचार दूर्घटना की रपट गृहमंत्रालय से मंगवाकर, उसकी जाँच के लिए कमिषन बनाया है।

अमर : यह सफेद झुठ है।

रामलाल : अरे भाई! जाने दो उन बातों को। चलो हमारे साथ।

अमर : मैं औरो की तरह बिका हुआ पत्रकार नही हूँ। मैं अपना जमीर नही बेचता। मुझे वक्त नही है.... ।

प्रेसिडेंट : फालतु लोगों से बाते करने के लिए हमारे पास भी वक्त नाही है।

अमर : आप लोग इसी रफ्तार से चलते रहे तो जनता आंदोलन करेगी। सब को मिटा भी सकती है।

प्रेसिडेंट : हम किसी आंदोलन से नही डरते। ऐसे आंदोलन को पैरोंतले कुचलने की हम में ताकद है। ... देषद्रोह के आरोप में हम तुम्हे हमेषा के लिए हवालत में बंद कर देंगे। - ५

भारत के राश्ट्रपिता का सपना (?) था कि देष का राश्ट्रपति हरिजन में से हो। इस सच को पकडकर नाटककार ने गांधी अनुयायियों की पोल खोलते हुए उनकी अंतर्गत दलित विरोधी 'षोशक' की प्रतिमा अनावृत्त की है ....

''रणछोडदास : सुंदरी ! ओ s सुंदरी s !!

(सुंदरी इखलाती बलखाती हुई आती है।)

सुंदरी : बोलो, आपकी क्या सेवा करू।

रणछोडदास : मोचीराम को तुम्हारे हाथों से पिला दो। जरा होष में । (सुंदरी षराब की प्यालियाँ अपने हाथों से भरकर तीनो को देती है। .... मोचीराम ! बुरामत मानना। एक तो तुम अछूत हो, हम लोग छोडकर ....

डॅनियल : बाकी सारे लोग तुम से नफरत करते हैं।

रणछोडदास : हमारे स्वर्गिय राश्ट्रनेता का सपना था कि एक दलित अछूत इस देष का प्रेसिडेंट बने। तुम्हारे प्रेसिडेंट बनने के सिवा मुझे चैन नही मिलेगा। मुझे अपना फर्ज पुरा करना है।

डॅनियल : तुम प्रेसिडेंट बनो, बाकी कारोबार हम संभाल लेंगे।

रणछोडदास : देष की अल्पसंख्यांक जातियाँ और दलितों का कल्याण हो, यह मेरा ध्येय है''-६

क) दलित विमर्ष के धार्मिक संदर्भ :
हिंदू धर्म की बुनियाद ही सामाजिक विशमतापर आश्रित होने से आज भी यहाँ उँच नीच का अतिरेक देखने को मिलता है।

सवर्णों को मनुस्मृति जैसे धार्मिक ग्रंथो ने दीनदलित तथा अबलाओं पर अन्याय-अत्याचार करने की मानो छुट दे दी है। धर्म ही वह अफिम की गोली है, जिसके अत्याधिक सेवन हो अधिकांष सवर्ण समाज आज भी

दलितों को अपने बराबरी का नही समझता। फलत: सवर्णद्‌वारा आज भी स्वातांयोत्तर भारत में दलितों को जिंदा जलाने, उनपर बलात्कार करने तथा उन्हे उपेक्षित रखने की साजिष होती है। दलितों का सर्वाधिक षोशण सवर्णोंके धर्म ने ही किया है। नाटककार ने बलात्कार की घटना के द्‌वारा दलित अत्याचार का यही धार्मिक संदर्भ प्रस्तुत किया है।

''पहला गुंडा : इन सालों को रस्सी से पेड से बांध दो। (एक दलित युवती अचानक रंगमंचपर प्रवेष करती है। सब के सब देखते रह जाते हैं।)

दलित युवती : नीच नालयको! छोड दो इन्हे । ये जुल्म जबरदस्ती बंद करो। नही तो ....।

मुखियॉ ठाकुर : नही तो क्या करोंगी ? लौंडी! साली ! फुलन बनना चाहती है।

पहला गुंडा : क्यो रे मेरी गुलछडी। कैसी ठुमकती है।

दुसरा गुंडा : साली, कितनी चिकनी है। खाने को दिल करता है।

दलित युवक : (क्रोध से) सालो! जान से मार दूँगा।

दलित बुढा : झगडा यही खतम करो। माफी मांग लो।

दलित युवती : जुल्म ये करे। अन्याय अत्याचार हा हम बर्दाष्त करे। और माफी हम ही मांगे ये कहॉं का न्याय है?

दलित युवक : बाबा अम्बेडकर जी ने कहा है, ''जुल्म करनेवाले से जुल्म सहनेवाला अधिक गुनाहगार है।'' जुल्म करने वालों को जड से काट देना चाहिए। यही मनुश्य धर्म है।

दलित युवती : ये काम अब हमारी नई पीढी को करना है।

तिसरा गुंडा : सालों ने क्या नौटंकी लगा रखी है?

मुखिया ठाकुर : तुम लोग क्या हिजडे हो? करो साली लौंडी को नंगी और लो मजा।

(उस दलित युवती का वे वस्त्रहरण करते है और बाकी दलितों को पीटते है।)-[७]

दलितों को आपस में लडाकर अपना उल्लु सिधा करने में अधिकांष सवर्ण समाज अग्रणी है। अपना श्रेशठत्व कायम बनाए रखना तथा दलितों को पैरों तले दबाए रखना मानो धर्म का सबसे बडा संदेष हो। इन्ही विचारों से प्रभावित प्रसिडेंट, इन्स्पेक्टर, जनरल, चरणदास जैसे चरित्र दलित आंदोलन में फुट डालकर अपनी तानाषाही कायम रखना चाहते हैं।

इन्स्पेक्टर जनरल : साहेब, अमरबाबु और दलितों का षिश्ट मंडल आपको मिलना चाहते है। दलितों पर हुए अत्याचारों की जॉंच करना चाहते है।

प्रेसिडेंट : उन्हे अंदर आने दो।

चरणदास : प्रेसिडेंट साहब, सिर्फ अमर को अंदर आने दो। दलित वर्ग के नाताओं को मिलने के लिए अलग अलग समय दो।

प्रेसिडेंट : दलित वर्ग के नेताओं के और उनके डेलिगेटस कल मिलने का समय दो।

इस्पेक्टर : यस सर ।

चरणदास : ''जनरल, जरा ध्यान रहे, मोर्चा के उपर हम आज्ञा देंगे उसी समय लाठी चार्ज करना। हवा में फाईरिंग करना ।''-[८]

समाज परिवर्तन की अदम्य अभिलाशा लिए तथ उपेक्षित बहुजन समाज को क्रांति हेतु प्रेरित करते हुए नाटककार कवि ने पाठकों को आवाहन करते हुए इस कृति का समापण किया हैं।

''चलो आज हम सब एक काम करेंगे
यहॉं इन्सान को ही देवता बना देंगे
अमीर गरीब दोने एक जगह मिला देंगे
सब भेद मिट जाएंगे, जंग नही होंगे
भूखे प्यासे यहॉं पर कोई नही रहेंगे
बुद्‌ध, ईसा, पैगंबर के, ख्वॉंब पुरे करेंगे''-[९]

निश्कर्श :

१) स्वातांयोत्तर कुछ हिंदी नाटककारों ने दलित विमर्ष पर कलम चलाई।

२) दलित विमर्ष पर इनेगिने किंतु प्रसिद्‌ध नाटकाकारों की रचनाएँ प्राप्त।

३) मूलत: हिंदी दलित नाटककारों एवं उनकी कृतियॉं की संख्या अत्यल्प।

४) दलित नाटकों में देष के दीनदलितों का निर्मम चित्रण।

५) दलित नाटक मात्र साहित्यिक रचना नही बल्कि जनजागरण का सक्षम माध्यम।

६) नाट्यकृति 'वतनवालो !' में दलित जीवन के दर्दनाक वास्तविक दस्तावेज प्रस्तुत।

७) 'वतनवालों !' में काव्यात्मकता, राश्ट्रप्रेम एवं मानवता का सुंदर समन्वय।

८) 'वतनवालों!' में परम्परागत पाखंडी एवं मनोरुग्ण समाज का नग्न चित्रण।

९) 'वनतवालो!' में षोशितों को षोंशकों के खिलाप जनक्रांति करने का आवाहन।

१०) नाट्यकृतिं पर बुद्ध, कबीर, फुले, अम्बेडकर एवं मार्क्स का गहन प्रभाव।

REFERENCES

१) पृश्ठ संख्या ००१ - वतनवालो! दास्तॉं तुम्हारी है, - प्रो.डॉ. वासुदेव सोनवणे, दलित द्य साहित्य प्रकाषन, पाचोरा (महाराश्ट्र) सन २००२ द्य २) पृश्ठ संख्या ००१ - उपरोक्त द्य ३) पृश्ठ संख्या ००४ - उपरोक्त द्य ४) पृश्ठ संख्या ००४ - उपरोक्त द्य ५) पृश्ठ संख्या ००८ - उपरोक्त द्य ६) पृश्ठ संख्या ०३२ - उपरोक्त द्य ७) पृश्ठ संख्या ००२ - उपरोक्त द्य ८) पृश्ठ संख्या ०१९ - उपरोक्त द्य ९) पृश्ठ संख्या ०४४ - उपरोक्त